विकास पत्रिका

इंस्टीट्यूट ऑफ रूरल रिसर्च एण्ड डवॅलपमेंट
(सहगल फाउंडेशन का प्रयास)

(अंक अप्रैल – जून, 2008)

विकास की ओर...

आज विश्व भर में 'पर्यावरण' चर्चा का विषय है। मानव समाज यह मानता रहा है कि पर्यावरण में फैली गंदगी, प्रदूषण के जिम्मेदार कहीं न कहीं हम ही हैं और इसलिए यह हमारा कर्तव्य बनता है कि हम पर्यावरण को बचाने के लिए ठोस कदम उठाएं।

5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस पर हमने कुछ गांवों में पर्यावरण संरक्षण की लौ जगाने की कोशिश की और इस कोशिश में हमें सभी का अपार सहयोग मिला। हम इसके लिए आपके आभारी हैं। पर्यावरण संरक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत, आदर्श ग्राम बनाने की राह पर अग्रसर नौटकी में इस दिवस को मनाया गया। इराद की टीम ने गांववासियों के साथ पर्यावरण सभा का आयोजन किया और पर्यावरण से जुड़े अहं मुद्दों पर चर्चा की। नौटकी वासियों ने चर्चा में दिलचस्पी दिखाते हुए कम से कम प्लास्टिक इस्तेमाल करने का वादा किया। जीवन कौशल कार्यक्रम की छात्राओं के साथ चित्रकला प्रतियोगिता कराई गई जिसमें कई बेहतरीन कला–कृतियाँ निकलकर आई।

कार्यक्रम को रोमांचक और प्रभावशाली बनाने के लिए ज्योतिसर, कुरूक्षेत्र से आए 'ज्योति कला मंच' समूह ने एक नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया। यह नाटक ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध तो किया ही पर साथ ही पर्यावरण संदेश भी दिया।

पर्यावरण संरक्षण के संदेश को गांववासियों की याद मे ताज़ा रखने के लिए सभी गांवों में 'जल है तो कल है' व 'पेड़ों के असली मूल्य' की बात को दीवार पेटिंग द्वारा जीवित रखा गया। खण्ड तावडू के गांव डींगरहेड़ी एवं जाफराबाद में भी युवकों के साथ पर्यावरण रैली निकाली गई।

हम आशा करते हैं कि पर्यावरण संरक्षण की लौ हर पल जलती रहेगी और सभी गांवों के लोग पर्यावरण के प्रति ज़्यादा संवेदनशील बनेंगे।

ई–मेल: smsf@smsfoundation.org

सफलता की ओर

स्वरोज़गार को बढ़ावा

ट्रेनर सैफुद्दीन (बाएं) छात्रों के साथ

तावडू खण्ड के गांव गोयला में इराद के तत्वाधान में चल रहे तीन माह के मोबाइल मरम्मत कोर्स से कई युवाओं को स्वरोज़गार में बढ़ावा मिला है। इस कोर्स के संचालन का उद्देश्य युवाओं को इस तकनीक से हुनरमंद बनाना है ताकि हुनर सीखकर युवा अपना व्यवसाय कर सकें। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम में गोयला, डीगंरहेड़ी व जाफराबाद सहित तावडू खण्ड के आस–पास के गांवो से 30 युवकों का दाखिला किया गया। कार्यशाला में सभी प्रकार

अपनी नयी मोबाइल दुकान में शाहिद

के मोबाइल जैसे नोकिया, सैमसंग, मोटरोला, सोनी एरिक्सन, स्पाईस आदि उच्च कौशल प्राप्त प्रशिक्षक द्वारा सही ढंग से ठीक करने सिखाए गए।

प्रशिक्षण में भाग लेने वाले 30 प्रशिक्षार्थियों में से 8 युवाओं ने अपना स्वयं का व्यवसाय शुरू कर दिया है। एक प्रशिक्षार्थी अरशद (गांव बेरी) से बात चीत करने पर पता चला कि व्यवसाय शुरू करने के लिए उसने दुकान में तीस हजार रूपये लगाये और अब वह दिन के 300 रूपये कमा लेता है। दुकान में मोबाइल रिपेयरिंग के साथ–साथ मोबाइल सम्बन्धी सामग्री तथा एस. टी. डी. आदि से भी कमाई होती है। ऐसी ही कुछ कहानी शाहीद, सलीम की भी है जिन्होंने प्रशिक्षण के दौरान ही अपना व्यवसाय शुरू कर दिया।

प्रशिक्षार्थियों से बात करके हमने उनके अनुभवों, उनकी आशाओं का ज़ायज़ा भी लिया। मुजाहिद, अस्तअली और मुबारिक अली भले ही किसान परिवारों से हों पर उनकी यह हुनर सीखकर अपना खुद का व्यवसाय बनाने की तीव्र इच्छा को हम सलाम करते हैं। प्रशिक्षण की सफलता का श्रेय प्रशिक्षक को भी जाता है। इराद टीम को एक गुणी प्रशिक्षक ढूढ़ने में काफी मेहनत करनी पड़ी। इस प्रोग्राम के ट्रेनर सैफुद्दीन ने दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातक की और इराद के साथ आने से पहले दो साल अपना खुद का व्यवसाय चलाया और अन्य संस्थाओं के साथ कार्यशालाओं का आयोजन भी किया। सैफुद्दीन का कहना है, ''शुरू में प्रशिक्षार्थियों के साथ कुछ दिक्कतें आई पर अब वह मेरे ज्ञान की इज्जत करते हैं और मुझे दोस्त की तरह मानते हैं''। वह अपने चेलों को निरन्तर मेहनत करने और सीखे हुए हुनर को काम में लाने की सीख देता है।

हम कह सकते हैं कि यह समाचार छपते–छपते कई और बच्चे अपना व्यवसाय शुरू कर देगें। हम इसकी तहे दिल से कामना करते हैं और इस जज़्बे के साथ आगे आने वाले प्रशिक्षार्थियों को हुनरमंद बनता हुआ देखना चाहते हैं।

कृषि के साथ पशुपालन जरूरी

पशु पालन कृषि का अभिन्न अंग है। मेवात में हुए एक सर्वे के मुताबिक पशु पालन किसानों की 26% आय का स्त्रोत है। भले ही हरियाणा के मुकाबले, मेवात में पशुपालन का बोलबाला कम हो परन्तु अब किसान इसे अपनाने के लिए आगे आ रहे हैं। किसानों की पशु–पालन से जुड़ी समस्याओं और शंकाओं को दूर करने के लिए इराद अपने आय वृद्धि कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रयासरत है।

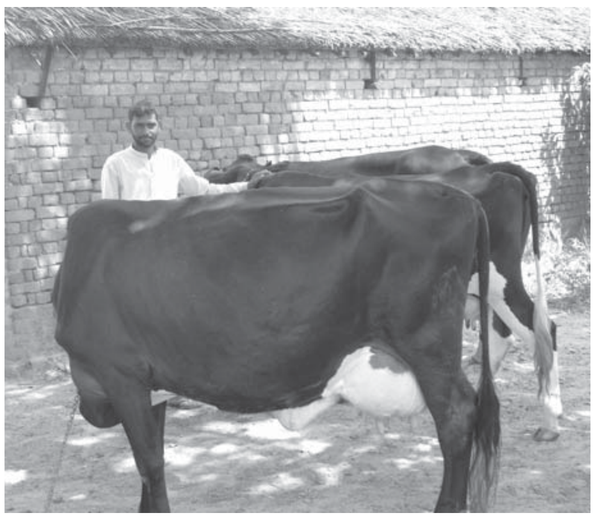

खण्ड तावडू के गांव गोयला, जाफराबाद तथा डींगरहेड़ी के विभिन्न किसानों ने अपनी आय बढ़ाने के लिए मिनि डेयरी लगाई। मिनि डेयरी लगाने से कई किसानों की आय पहले से बढ़ गई है। इस आचरण बदलाव के पीछे किसानों के साथ हुई कार्यशाला एवं दिये गए प्रशिक्षण का हाथ है।

मिनि डेयरी लगाने के लिए ज़मीन और कुछ मूलधन की जरूरत होती है। तावडू के 40 किसानों

कार्य उद्यम से सिद्ध होता है, मनोरथों से नहीं ।

के साथ हुए प्रशिक्षण की सफलता, तावडू में चल रही 5 मिनि डेयरी युनिट से लगाई जा सकती हैं। यह प्रशिक्षण पशुपालन विभाग, हरियाणा सरकार द्वारा किया गया जिसे इराद ने संचालित किया।

इस प्रशिक्षण में कृषि से सम्बन्धित आगत –क्रिया–एवं उत्पाद के मुद्दों पर बात की गई। साथ ही साथ डेयरी व्यवसाय से परिचित भी कराया गया। जानकारी को विवरण के ज़रिए किसानों की स्वीकृति में बदलने के लिए एनडीआरआई करनाल का भ्रमण भी आयोजित किया गया। पशुपालन के लिए उच्च कोटी की गाय–भैंस की नसल, आधुनिक तरीके से पशु रख–रखाव तथा आर्थिक मदद के लिए बैंक संयोजन पर भी विस्तृत चर्चा हुई।

दो किसानों की डेयरी के शुरूआत से पहले और अब की स्थिति का जायज़ा निम्नलिखित सूची से लगाया जा सकता है–

नूर मोहम्मद (जाफराबाद)				
	पशु	मासिक खर्च	मासिक आमदन	मासिक कमाई
पूर्व	दो भैंस	रू 2400	रू 3600	रू 1200
पश्चात्	तीन भैंस	रू 7920	रू 12258	रू 4338
आजाद (जाफराबाद)				
	पशु	मासिक खर्च	मासिक आमदन	मासिक कमाई
पूर्व	दो भैंस	रू 2200	रू 4000	रू 1800
पश्चात्	पाँच गाय	रू 12150	रू 19670	रू 7520

उपर्लिखित किसानों ने मिनि डेयरी प्रशिक्षण के बाद उसी पशु की उच्च कोटि नस्ल पाली (अमेरिकन नस्ल) भले ही उसमें थोड़ा ज्यादा खर्च है परन्तु आमदन में वृद्धि उसकी भरपाई कर देती है। जाफराबाद के आज़ाद नामक किसान ने अपनी दो भैंस बेचकर मिनि डेयरी के लिए पांच गाय खरीदी क्योंकि वैज्ञानिक प्रमाणों के अनुसार भैंस की अपेक्षा गाय औसतम ज़्यादा दिन तक और अधिक मात्रा में दूध देती है।

सूचारू रूप से चल रहे डेयरी युनिट दूसरे किसानों के लिए मिसाल बन गए हैं।

सत्यमेव जयते

साक्षरता, सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक विकास का एक अहम गुणात्मक प्रतीक है जो देश में विकास का संकेतक है। मानव – संसाधन प्रगति का अभिन्न अंग माना जाने वाला यह संकेतक हर योजना का हिस्सा है। ग्राम स्तर पर शिक्षा से जुड़े मसलों को सुचारू रूप से चलाने के लिए ग्रामीण शिक्षा समिति (वी.इ.सी) का निर्माण किया गया है। वी.इ.सी स्थानीय लोगों से गठित की गई एक समिति है जो शिक्षा से जुड़े मासलों की देख रेख करती है। इराद वी.इ.सी की कार्य क्षमता बढ़ाने में प्रयत्नशील है।

एक हाल ही में हुई सांठावाड़ी माध्यमिक स्कूल की घटना ने वी.इ.सी की उभरती छवि का सुबूत देते हुए यह दर्शाया कि कैसे जागरूक लोग अपनी समस्या स्वयं सुलझा लेते हैं। वी.इ.सी सांठावाड़ी की अप्रैल 2008 मे हुई बैठक का मुद्दा विद्यार्थी और शिक्षक में बढ़ता अनुपात था जो 1:300 पर था। सांठावाड़ी स्कूल को 2008 में ही माध्यमिक स्तर प्रदान किया गया है परन्तु अभी भी स्कूल केवल एक स्थायी अध्यापक के हवाले था। स्कूल का स्थायी अध्यापक निर्वाचन प्रतिनिधियों की सूची तैयार करने के लिए विशेष काम में नियुक्त था तभी इराद टीम की मदद से, वी.इ.सी मेमबरान और सरपंच ने मिलकर कार्यवाही करने का निर्णय लिया। यह लोग सीधे अधिकारियों के पास पहुँचें और उनके समक्ष एक निश्चित हल निकालने की मांग रखी।

तभी लोगों का आक्रोश देखते हुए सहायक ब्लाक संयोजक ने दो नए अतिथि अध्यापक रखने का फैसला किया। साथ ही साथ कक्षा आठ के लिए एक नए स्थायी अध्यापक की भी नियुक्ति की गई।

उपरोक्त घटना से कई अनुभवी तथ्य निकलकर सामने आते हैं–

(1) लोग अपनी समस्याएं स्वयं सुलझा सकते हैं। उन्हें थोड़े मार्गदर्शन की जरूरत होती है।

(2) शिक्षित व जागरूक लोगों को विकास के लिए संगठित होना जरूरी है।

(3) निरन्तर निगरानी ही विकास की कीमत है। अर्थात अगर लोग अपना विकास करना चाहते हैं तो उन्हें सत्त रूप से जागरूक रहना पड़ेगा।

प्रशिक्षण

कूड़ा प्रबंधन-समय की मांग

भारत के विकास के अगणित परिणामों में शहरीकरण प्रमुख है। जैसे–जैसे गांव और नगर आकार में बढ़ते हैं वैसे ही कई समस्याएँ आ खड़ी होती हैं। कूड़ा निपटान एक ऐसी ही समस्या है जिसका समाधान ढूढ़ना अनिवार्य है नहीं तो इस समस्या को भयानक आकार लेने में वक्त नहीं लगेगा।

गीता का जन्मस्थान माना जाने वाला, ऐतिहासिक गौरव प्राप्त कुरूक्षेत्र का गांव ज्योतिसर स्वास्थ्य सूचकों से कौसों दूर था। जब गांव में एकीकृत स्थायी ग्रामीण विकास के अन्तर्गत काम शुरू हुआ तब 978 घरों के इस गांव में मात्र 400 शौचालय थे। गांव में कूड़ा अनियमशील एंव विवेकहीन तरीके से फेंका जाता था जो कई बीमारियां पैदा करता था। नालियों की समय पर सफाई नहीं होती थी और देख रेख एक चिन्तापूर्ण मुद्दा था। परन्तु गांववालों को इस समस्या का सबब ही न था। ऐसी स्थिति में आचरण बदलाव से ही सुधार लाया जा सकता है और यह तभी सम्भव है जब लोग इसके प्रति जागरूक हों।

इराद की ग्रामीण स्वास्थ्य, प्रोग्राम लीडर, डा. अर्चना ने ज्योतिसर की ग्राम स्तरीय टीम के साथ एक प्रशिक्षण सत्र का आयोजन किया। इस प्रशिक्षण में 30 सदस्यों ने भाग लिया जो प्राप्त ज्ञान को आगे पहुँचाने में कार्यरत होंगे। प्रशिक्षिण का मुख्य उद्देश्य लोगों को कूड़ा निपटान से जुड़ी अहं बातों से परिचित कराना था जिससे एक निर्मल एवं स्वच्छ गांव की नीव रखी जाए और जहां कोई भी व्यक्ति खुले में शौच न करे। प्रशिक्षण में प्राकृतिक तरीके से सड़नशील पदार्थों के कम्पोस्ट, और कम से कम कूड़ा फैलाने तथा ठोस और तरल कूड़े में फर्क और उसके निपटान के तरीकों से अवगत भी कराया गया।

'कूड़े का छांटन, पुनः प्रयोग और पुनर्चक्रण' ही समस्या का एकमात्र हल बताया गया जिसे गांववालो ने स्वीकर भी किया। इस प्रशिक्षण के परिणाम स्वरूप पिछली तिमाहि में 96 शौचालय बनवाए गए और अब ज्योतिसर गांव पूर्ण स्वच्छता से कुछ ही कदम दूर है। प्रशिक्षण से पूर्व हुए स्वच्छता अभियानों के चलते गांव में अन्य 354 शौचालय बन चुके हैं। पंचायत भी इस कार्य में इराद को खासा सहयोग दे रही है और उनके तत्वाधान में मुहल्ले में चार सफाई कर्मचारी रखने का निणर्य भी लिया गया है। साथ

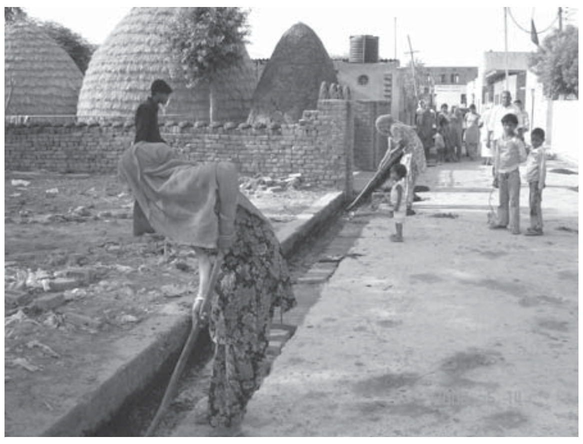

ही बड़े नाले की मरम्मत का काम भी शुरू करवाया गया है ताकि लोग कूड़ा खुले में न फेंके।

आओ मिलकर स्वच्छता की ओर कदम बढ़ाएँ।

युवाओं का सशक्तिकरण

तावडू खण्ड में हुई व्यक्तित्व विकास कार्यशाला

इन्सान का व्यक्तित्व विकास ही उसकी स्वयं की जिन्दगी और समाज में उसकी भूमिका को आकार देता है। हमारा व्यक्तित्व ही समाज के कार्यों में मददगार साबित होता है। व्यक्तित्व विकास की ओर कई संस्थाएँ प्रयत्नशील रही हैं जिनका मुख्य उद्देश्य उन बाधाओं को हटाना है जो व्यक्तित्व विकास के रास्ते में आती हैं। यह बाधाएँ दूर करने के लिए प्रशिक्षण बहुत बड़ा साधन है।

इराद का जीवन कौशल शिक्षा कार्यक्रम युवाओं की जिन्दगी के कई पहलुओं पर काम करता है जो व्यक्तित्व विकास के अभाज्य गुणक हैं। यह कार्यक्रम उन्हें सही समय पर सही निर्णय लेने में सशक्त बनाता है फिर चाहे वह निजी या व्यवसायिक ज़िन्दगी से जुड़े हों। युवाओं को निरोधात्मक भावों से उभारना, भावनात्मक बदलाव, आत्मविश्वास सिखाता यह कार्यक्रम उन्हें उन्नतिशील ज़िन्दगी की ओर अग्रसर करता है।

जाफराबाद एंव डींगरहेड़ी में चलाए गए 23 दिवसीय व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य युवाओं को उनके निकटतम वातावरण से परिचित कराना था और उनमें एक नई किरण को उजागर करना था जिससे वह अपने और सामाजिक जीवन में सकरात्मक योगदान दे सकें।

प्रशिक्षण पाठ्यक्रम को बहुत ही संवादात्मक बनाया गया जिससे युवाओं को कई योजनाओं पर काम

अपनी शक्तियों पर भरोसा करने वाला कभी असफल नहीं होता ।

करने का मौका भी मिला जैसे 'किस प्रकार एक ग्रामीण परिवार को उनके बच्चे को स्कूल में भेजने के लिए मनाया जाए।' 'उन्हें सोक पिट निर्माण कार्य में श्रमदान करने का मौका भी दिया गया। यह सभी कार्यों ने न ही उनके वार्तालाप एवं समझौता करने की कुशलता को बढ़ावा दिया बल्कि उन्हें एक सशक्त व्यक्तित्व बनाने में तैयार भी किया।

कार्यक्रम में समझाए गए सभी विषय रचनात्मक थे जैसे कि आत्मबोध, संस्कार, भावनाएँ, लिंग भेदभाव, परिवार, स्वास्थ्य, युवावस्था, ग्राम और स्वच्छता, शासन प्रणाली और उसके अंग। हम सभी युवाओं के सशक्तिकरण की कामना करते हुए उनमें एक नए भाविष्य की छवि को देखते हैं।

प्रेरणा

शाबाश सुदेश

अशिक्षित व्यक्ति अन्धे के समान होता है। उसे भर पेट खाने को मिल जाए–उसी से वह सन्तुष्ट रहता है। बाहर इतनी बड़ी दुनिया का उसे ख्याल नहीं रहता। सुदेश की ज़िन्दगी भी ज्योतिसर गांव तक ही सीमित थी। अपने गांव से बाहर वह बहुत कम निकली और जब भी निकली तो अपने चेहरे को पर्दे से ढांक कर। इराद के गांव में आने पर उसकी पूरी दुनिया ही बदल गई और फिर सुदेश ने पीछे मुड़ कर नहीं देखा। गरीबी रेखा से नीचे जीवन व्यापन करने वालें 'पीले कार्ड' धारक परिवारों में एक परिवार उसका भी था।

इराद ने ज्योतिसर में ऐसे परिवारों का स्वयं सहायता समूह बनाया। सुदेश को इस समूह का प्रधान नियुक्त किया गया। इसी के चलते सुदेश को विभिन्न तरह के प्रशिक्षण प्रदान किए गए ताकि समूह की गतिविधियाँ सुचारू रूप से चल सकें। उसके नेतृत्व में 'आशीर्वाद' नामक समूह उन्नति की ओर अग्रसर है। सरकार की तरफ से समूह की सफलता के पारितोषिक स्वरूप रू 10,200 का अनुदान दिया गया। कुछ समय बाद ही अच्छे ऋण प्रबंधन को देखते हुए बाद में सरकार ने रू 1,20,000 का अतिरिक्त अनुदान प्रदान किया।

ज्योतिसर गांव में सिमटी सुदेश अब दो और समूहों का संचालन करती है। इन समूहों द्वारा निर्मित 'क्राफ्ट' की वस्तुओं की प्रदर्शनी व उन्हें बेचने के लिए अब वह राज्य की राजधानी चंड़ीगढ़ और चंड़ीगढ़ के बाहर भारत देश की राजधानी दिल्ली जाने लगी।

आत्म –विश्वास से भरपूर सुदेश के लिए जिन्दगी के मायने बदल गए। आज वह जीवन का भरपूर आनन्द ले रही है क्योंकि उसका बेटा कुरुक्षेत्र विश्व विद्यालय में 'सूचना तकनीकी' का स्नातक कार्यक्रम पढ़ रहा है। यह इसलिए सम्भव हो पाया क्योंकि विश्व विद्यालय की फीस भरने के लिए सुदेश को अपने स्वयं सहायता समूह 'आशीर्वाद' से ऋण मिल गया था।

आज सुदेश एक प्रकाश पुंज की भांति अपने परिवार व अड़ोस– पड़ौस के लोगों को यह सन्देश देती है कि शिक्षा जीवन के लिए बहुत जरूरी है तथा छोटी –छोटी बचत के संग्रहण के सहारे अपरिमित लक्ष्य हासिल किए जा सकते हैं।

कुरुक्षेत्र की महिला टीम द्वारा नाटक मंचन

ज्योतिसर की महिलाएँ आज जागरूक हैं। वे अब घर से बाहर निकलकर अपने परिवार और सामाजिक विकास के लिए अग्रसर हैं। इराद के सम्पर्क में आई महिलाएँ व उनका स्वास्थ्य कार्यक्रम में योगदान इसका उदाहरण है। संतोष, संजोगिता, सुदेश, ऊषा व ममता आज इराद की स्वास्थ्य कार्यकर्ता बन चुकी हैं। वे स्वस्थ्य जीवन का महत्व कई प्रकार से गांववालों को समझाती हैं। हाल ही में इन स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं ने एक साथ मिलकर नुक्कड़ नाटक के माध्यम से समाज को जागरूक करने का निर्णय लिया।

इन महिलाओं ने गांव भोर – सैय्यदा में अनपढ़ता के व्यापक रूप को कम करने के लिए एक नाटक का मंचन किया। नाटक का गांववालो पर काफी असर हुआ और लोगों ने इसकी भूरी –भरी प्रशंसा की। महिलाओं की इस पहल को देखकर अन्य महिलाओं में भी उत्साह व कुछ कर गुजरने की इच्छा जागृत हुई।

प्रयास

नौटकी - एक नयी राह पर

विकास एक बहुत ही धीमी प्रक्रिया है परन्तु इसका यह अभिप्राय नहीं कि विकास संभव ही नहीं। विकास के सभी पहलू लोगों तक पहुँचाने के लिए उन्हें उसका प्रभाव दर्शाना एवं बतलाना अनिवार्य हो जाता है क्योंकि तभी वह सामने से आकार विकास कार्य में सम्मिलित होते हैं।

नौटकी ग्राम एक ऐसा ही गांव है जहां इराद के तत्वाधान में गांव को आदर्श ग्राम बनाने की प्रक्रिया का बिगुल बजा दिया गया है। इस गांव में स्थायी विकास से जुड़े हर मध्यवर्तन को दर्शाया जाएगा जो ज़िला पंचायत एवं सरकार के लिए प्रेरणा स्त्रोत का कार्य करेगा। इस पूरे कार्य में क्षमता विकास की मुख्य भूमिका है।

नौटकी में चल रही निरूपण प्रक्रिया के अन्तर्गत किए जाने वाले सभी कार्य एकीकृत स्थायी ग्रामीण विकास की इकाई को पक्का करेगें।

ग्रामीण स्वास्थ्य- इस कार्य के अन्तर्गत महिलाओं के लिए प्रसव कक्ष की स्थापना, गांवों में 100% लैटरीन निर्माण, टेलीमेडीसन कार्य किए जाएगें।

जल प्रबंधन-सोखता गड्ढा, बायो–सैंड फिल्टर, दूषित जल का विक्रेन्द्रीय निपटान, मूल्यहीन वस्तुओं का एकत्रीकरण एवं भण्डारण और निपटान, प्राकृतिक तरीके से सड़नशील वस्तुओं का निपटान आदि।

आय वृद्धि-एक प्रस्तावित बाग जहाँ हार्टीकलचर, (बागवानी) से जुड़ी सभी तकनीकियों का प्रदर्शन किया जाएगा।

जीवन कौशल शिक्षा-स्कूलों को हरा –भरा करना, स्कूलों में मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराना, स्कूल परिसर में साफ जल उपलब्ध कराना।

वैकलिपक ऊजा-सौर ऊर्जा पर आधारित स्ट्रीट लाइटों को लगाना।

इराद इस राह पर अग्रगामी होने और एकीकृत विकास को निरूपित करने के लिए तत्पर है। हम यही प्रतिबद्धता, विश्वास एवं धारणा के चलते ग्रामीण परिप्रेक्ष्य को तकनीकी निरीक्षण से जोड़ कुछ नया कर दिखाने का बीड़ा उठाते हैं। भारत में 6,00,000 गांवो को इसी तरह की प्रतिबद्धता की जरूरत है।

नौटकी का निरूपण एक मिसाल है और वर्ष 2008 के अन्त तक इराद इस कार्य में प्रयत्नशील इस गांव में एक नई उम्मीद, नए सवेरे को प्रतिस्थापित करने मे कामयाब होगा।

रनियाला गांववासियों द्वारा 40000 रूपयों का सहयोग

कई बार एन. जी. ओ. के सामने यह समस्या आती है कि गांव के लोग विकास कार्यो में सहयोग नही करते। वे चाहते हैं कि एन.जी.ओ. उनके गांव में आए और उनका विकास करे। जब गांववासियों से किसी तरह का सहयोग मांगा जाता है तो वे आगे नही आते। समुदाय की तरफ से नकद राशि का सहयोग तो स्वप्न जैसा है।

23 जून को रनियाला गांव के 20 लोगों व इराद के स्टाफ के बीच एक मीटिंग हुई। गांव के लोगों ने समस्या रखी कि गांव से दूर पहाड़ी से बहकर आने वाले बरसात के पानी के कारण उनके खेत कट रह हैं। उन्होंने नाले के बीच तीन जगह बन्ध लगाने का सुझाव रखा। इराद की टीम ने नाले व उससे फटने वाले खेतों का नीरिक्षण किया। गांव के सामने बाधों के लिए आवश्यक पत्थरों की कुल लागत राशि लगभग 40,000 रूपये अनुमानित की गई । गांव के लोगों ने इसे स्वीकार किया। वहाँ उपस्थित ग्रामीण हाजी अब्दुल गफूर ने उसी समय 100 रूपये का सहयोग कर इस कार्य का शुभारम्भ किया। करीब 10 दिन के अन्दर गांववालों ने 40,000 रूपया इकटठा कर लिया। अब वे इस राशि से पत्थर खरीदने का इन्तज़ाम कर रहे हैं। उपरोक्त तथ्य समुदाय के बीच विकास कार्य में लगे लोगों के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण शिक्षा लिए हुए है–

1. समुदाय के विकास के लिए लोगों के साथ मिलकर कार्य योजना बनाना जरूरी है।

2. कोई भी विकास कार्य अगर लोगों की जरूरत है तो उन्हें तन, मन व धन से उस कार्य में सहयोग करना चाहिये।

राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी अधिनियम (एनआरईजीए) एक ऐसा अधिनियम है जो रोज़गार के लिए आवेदन करने वाले और अकुशल शारीरिक कार्य करने के इच्छुक परिवारों को 100 दिनों के रोज़गार की गारंटी देता है। मेवात एनआरईजीए के अन्तर्गत दूसरे चरण में आने वाले 130 जिलों (2006–2007) में जोड़ा गया। इस तिमाहि में एनआरईजीए के तहत गांव भोंड एवं कोटला में पहले से बने बंधों की क्षमता वृद्धि की गई । आने वाले समय में इस स्कीम के अन्तर्गत भोंड, पाठखोरी, रनियाला एवं कोटला गांवों में जल संरक्षण कार्यो को अंजाम दिया जाएगा।

बिना अनुभव के कोरा शाब्दिक ज्ञान अंधा है।

आओ सीख लें
कबीर की सीख

कबीर दिनभर अपने करघे पर कपड़ा बुनते। शाम होती तो अपने घर के बाहर चबूतरे पर जा बैठते। उन्हें बैठे देख कर एक–एक कर लोग इकट्ठे होने लगते। देर तक उनके बनाये पदों का, साखियों का गायन होता रहता। फिर ज्ञान चर्चा होती। एक दिन उनके एक शिष्य ने कहा–'महाराज, मुझे नशा करने की आदत हो गयी है। रामभजन में बड़ी बाधा पड़ती है।'तो उसे छोड़ क्यों नहीं देते?' कबीर ने पूछा। 'मै तो उसे छोड़ना चाहता हूँ, मगर वही मुझे नहीं छोड़ता।' तो कल सवेरे साथ घूमने चलना। देखते हैं क्या हो सकता है।' और अगले दिन दोनों गुरू शिष्य घूमने निकले। जंगल में घूमते–घूमते अचानक कबीर ने उछलकर एक पेड़ की डाल पकड़ी और उससे लटक गये।

शिष्य हैरान रह गया कि गुरूजी यह क्या कर रहे हैं। बोला– 'महाराज, क्या हुआ? इस तरह पेड़ से क्यों लटक गयें?

कबीर बोले–'भाई मैं कहां लटका? पेड़ ने ही मुझे लटका लिया 'तो छोड़िये न इसको' 'पर भाई, यही मुझे नहीं छोड़ता, मैं तो इसे छोड़ना चाहता हूं।' इस पर शिष्य को बड़ी हैरानी हुई। बोला–'गुरूजी, आपने पेड़ पकड़ रखा है, पेड़ ने आपको थोड़े ही पकड़ा है। आप छोड़कर अलग हो जाएये। 'कैसे हो जाऊं भाई, जैसे नशे की आदत ने तुम्हें पकड़ रखा है वैसे ही पेड़ ने मुझको। वह तुमको छोड़े तो यह पेड़ भी मुझको छोड़े।

शिष्य समझ गया। गर्दन झुकाकर बोला –'सही कहते हैं महाराज, मैनें यह आदत पकड़ी है तो मैं ही छोड़ूंगा।

कबीर ने पेड़ की डाल छोड़ दी। प्यार से शिष्य के कंधों पर हाथ रखकर आगे बढ़े।

शिष्य ने उसके बाद कभी नशा नहीं किया।

ज़रा सोचिए
औरत की घटती संख्या -जिम्मेदार कौन ?

विश्व में 3 अरब लोग प्रतिदिन 2 डालर (80रूपया) से कम खर्चे पर जीवन वहन करते हैं। भारत मे 30 करोड़ 17 लाख लोग गरीबी रेखा के नीचे जीवन व्यापन कर रहे हैं। अर्थात् आबादी का तीसरा हिस्सा प्रतिदिन 12 रूपये से खर्चे पर जिंदा रह रहा है।

ऐसी हालत में औरतों पर दोहरी मार पड़ती है। एक गरीबी का औरतों पर ज़्यादा असर होता है, दूसरे समाज मे प्रचलित कुछ विश्वास और प्रथाएँ उनकी हालत को और बदतर बनाते हैं । संयुक्त राष्ट्र का अनुमान है कि संसार में करीब 20 करोड़ ऐसी औरतें ज़िन्दा नहीं है जिन्हें आज ज़िन्दा होना चाहिए था। आप गरीबी को इसका कारण मान सकते हैं लेकिन अकेले गरीबी को इसका जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता। समाज भी इस घटती औरतों की संख्या के लिए जिम्मेदार है।

जब परिवार के पास पर्याप्त खाना नहीं होता तो औरत को इच्छा या अनिच्छा से अपने हिस्से के खाने की कुर्बानी पुरुष सदस्यों के लिए करनी पड़ती है। जब किसी गरीब किसान का बेटा और बेटी दोनों बीमार हैं और वह किसी एक के इलाज के खर्चे का भार वहन कर सकता है तो बेटे को प्राथमिकता दी जाती है।

ऐसी मान्यताओं के चलते एक औरत को ऐसी कुर्बानी कब और कितनी बार देनी होती है इसका अन्दाज़ा नहीं लगाया जा सकता। परन्तु इसका औरतों के जीवन पर जो प्रभाव पड़ता है उसे जरूर गिनाया जा सकता है। दक्षिणी ऐशिया जिसमें भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, अफगानिस्तान व नेपाल शामिल हैं का उदाहरण लें तो पाएंगें कि मातृ–मृत्यु का बड़ा हिस्सा इन देशों से सम्बन्धित है। इन देशों में 60% प्रजन्नशील महिलाएँ कुपोषित हैं। औरतों को प्रायः ज्यादा काम करना पड़ता है, कम खाना मिलता है तथा अपने स्वास्थ्य देख –रेख करने पर उनका नियन्त्रण नहीं हैं।

इन विलुप्त औरतों की संख्या से ज़्यादा भयावह इन बच्चियों की संख्या हैं जिन्हें मां के गर्भ में ही मार दिया जाता है। जाग्रुक जन साधारण ही इस समस्या का हल ढूढ़ सकता है। विश्वस्तरीय उत्थान तभी सम्भव है जब स्त्री–पुरुष को समान दर्जा मिलेगा।

छोटी -बात बड़ी बात

(1) स्वास्थ्य विभाग एवं इराद ने मिलकर पाठखोरी गांव में 26 जून को नशा मुक्ति दिवस पर एड्स जांच शिविर का आयोजन किया। इस अवसर पर गांव की 30 महिलाओं एवं 10 पुरूषों की एड्स की जांच के लिए रक्त के नमूने लिए। जिला एड्स काउंसलर वरूण कौशिक ने ग्रामीणों को सम्बोधित करते हुए नशा करने से जुड़ी बीमारियों के बारे में बताया और कहा कि ड्रग्स का ज्यादा सेवन करने से मृत्यु भी हो सकती है। इस मौके पर उपस्थित ग्राम सरपंच शहीदन ने जांच शिवर लगाने के प्रायस को सराहा और युवाओं को नशाखोरी से दूर रहने के लिए जागरूक करने पर आभार प्रकट किया।

(2)मांडीखेड़ा अस्पताल में 28 जून को दाई प्रशिक्षण आयोजित किया गया जिसमें हमारे गांवो की 23 महिलाओं ने भाग लिया। यह प्रशिक्षण डा. एच. एस.

रनधावा (प्रमुख चिकित्सा अधिकारी) एवं. डा. बट्टा ने संचालित किया जिसका मुख्य उदेश्य सुरक्षित गर्भ चिकित्सा एवं प्रसूति था। उन्होने गर्भावस्था के मामलों में सफाई से जुड़ी अहं बातों का ध्यान रखने को कहा और बताया कि जोखिम मामलों में नज़दीकी अस्पताल की राय लेना ही उचित है।

ग्रामीण स्वास्थ्य विषेशज्ञ, शाहीन खातून अब यह जानकारी स्वास्थ्य सखियों में बांटेगी और ज्यादा से ज्यादा प्रसव अस्पताल में कराए जाने पर जोर देगी।

(3) इराद के तत्वाधान में सभी केंद्र गांवो मे योग्यता निर्धारित आठ छात्रवृतियों की घोषणा की गई है। यह छात्रवृतियाँ दो साल के लिए दी गई हैं। जो कक्षा नवीं एवं दसवीं या ग्यारहवीं –बारहवीं में प्राप्त की जा सकती हैं। इस स्कीम में कुल छह लड़कियों एवं दो लड़कों का चुनाव किया गया है। इराद लड़कियों में औपचारिक शिक्षा को बढ़ावा देने में ठोस कदम उठा रहा है जिसके फलस्वरूप सांठावाडी गांव में मई माह मे 5 छात्राओं को स्कूल में भर्ती कराया गया है।

(4) घाघस सामुदायिक केन्द्र में 18 जून को ग्राम स्तरीय टीम के लोगों के परिवारों के साथ एक सैशन लिया गया जिसका मुख्य उद्देश्य हमारे सभी प्रोग्रामों में महिलाओं को बढ़ावा देने का प्रयत्न करना था। इस सैशन मे पुरूष एवं महिला की सहभागिता पर जोर दिया गया।

(5) गरीबी रेखा से नीचे आने वाले परिवार राष्ट्रीय पशुधन बीमा योजना के तहत पशुओं की मुफत बीमा प्राप्ति के पात्र हैं। इसी स्कीम के अन्तर्गत इराद की ग्रामीण स्तरीय टीम ने 90 पशुओं का बीमा कराया है। यह बीमा किसान की पशु लागत जोखिम को कम करता है और पशु को कुछ होने पर उन्हें पुनः पैसा प्राप्त कराता है।

आदर्शता की ओर बढ़ते कदम

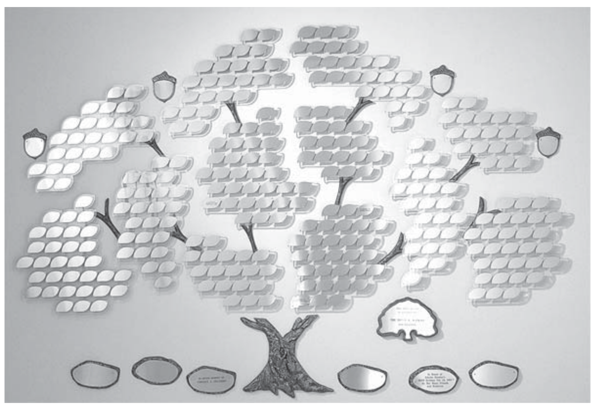

खण्ड तावडू के गांव जाफराबाद के माध्यमिक विद्यालय ने सिद्ध किया है कि आदर्श विद्यालय बनना नामुकिन नहीं। एक सवाल के जवाब में ग्राम शिक्षा समिति के सदस्यों तथा गांव के जिम्मेदार लोगों ने बताया कि हमारे विद्यालय में मूलभूत सुविधाओं तथा शिक्षा की गुणवत्ता पर जोर शोर से काम हो रहा है। इस कार्य में इराद की टीम ने काफी सहयोग दिया है।

परन्तु इस सब बदलाव में अध्यापकों का अहम योगदान रहा है। स्कूल में भर्ती होने वाले लड़के एवं लड़कियों दोनों की संख्या में इज़ाफा हुआ है। सभी के प्रयासों को मद्देनज़र रखते हुए अब सिर्फ 2% बच्चे ही स्कूल से बाहर हैं।

2006 से 2008 में बच्चों के दाखले की स्थिति-

साल	लड़कों की संख्या	लड़कियों की संख्या	कुल संख्या
2006	84	86	170
2007	121	92	213
2008	143	117	260

जागरूकता की इस लहर को देखकर सभी गांववासी बेहद खुश हैं। वी. इ. सी. मेमबरान निरन्तर शिक्षा की गुणवता बढ़ाने में प्रयासरत हैं।

विकास पत्रिका का यह अंक आपको कैसा लगा? आप अपनी राय और सुझाव हमारे ग्राम स्तर कार्यकर्ताओं अथवा नीचे दिए गए पते पर भी लिखित में भेज सकते हैं। हम कोशिश करेगें कि अगले अंक में आपके सुझाव सम्मिलित करें ।

विकास पत्रिका सम्पादकीय टीम
इंस्टीट्यूट ऑफ रूरल रिसर्च एण्ड डवॅलपमेंट
(सहगल फाउंडेशन का प्रयास)
प्लाट न0 34, सेक्टर 44 इंस्टीट्यूश्नल एरिया
गुडगांव, हरियाणा 122002

विश्वास से आश्चर्यजनक प्रोत्साहन मिलता है।